अध्याय 5

यीशु मसीह

"हां मैं यीशु पर अवश्य विश्वास करता हूँ," मेरे नए मित्र ने कहा। "वह एक महान भविष्यद्वक्ता, परमेश्वर के पास से भेजा गया था जिसने बहुत शिक्षाएं दी जिन्हें हमें मानना चाहिए।"

"यह खुशी की बात है," मैंने उत्तर दिया, "किन्तु इतना काफी नहीं हैं। तुम्हें सिर्फ इतना ही विश्वास नहीं करना है कि वह एक महान भविष्यद्वक्ता था किन्तु यह भी कि वह परमेश्वर है। उसे आपको एक ईश्वर एवं उद्धारकर्ता के रूप में जानना आवश्यक है।"

मेरे मित्र के लिये यह स्वीकार करना कठिन था। उसे यीशु के बारे में कुछ बातें मालूम थीं किन्तु उसने उसके साथ अपना व्यक्तिगत सम्बन्ध उसके वचन पढ़ने या प्रार्थना के द्वारा कभी स्थापित नहीं किया था। उसके लिये यह विश्वास करना काफी कठिन था कि सभी लोग पापी हैं (जैसे हमने पाठ चार में अध्ययन किया) या यह कि पाप से बचने का भी कोई उपाय है।

उस दिन उसने मुझसे कई प्रश्न किये। यीशु कौन है? एक ही समय में वह ईश्वर एवं मनुष्य कैसे हो सकता है? यदि वह मरा तो मसीही लोग क्यों कहते हैं कि वह जीवित है? अभी वह क्या कर रहा है?

इनका सबसे अच्छा उत्तर मुझे बाइबल धर्मशास्त्र में प्राप्त हुआ। इस पाठ में हम उन प्रश्नों को देखेंगे और उनका उत्तर ढूंढ़ेंगे जिन्हें मेरे मित्र ने जानना चाहा था।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे....

उसका व्यक्तित्व

उसका उद्देश्य

उसका वापस आना

इस पाठ से यह सहायता मिलेगी कि आप....

- यीशु कौन है इसकी व्याख्या कर सकें।
- उसके प्रथम आगमन के उद्देश्य को तथा भविष्य में उसके वापस आने को समझ सकें।

उसका व्यक्तित्व

उद्देश्य १. यीशु के बारे में बाइबल के वर्णन को समझना।

यीशु मसीह परमेश्वर का प्रत्यक्ष प्रगटीकरण है। उसे मनुष्य बनना पसन्द आया ताकि हम उसे भली भांति समझ सकें एवं अपने लिये उसके उद्धार की योजना को जान सकें। इस प्रकार मनुष्य के समान बनने का अर्थ यह हुआ कि यीशु के एक व्यक्तित्व में दो स्वभाव हैं, अर्थात् मनुष्य एवं ईश्वरीय दोनों। रोमियों १:३-४ कहती है:

> अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी जो शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है। मनुष्य का स्वभाव प्राप्त करने के लिये उसने मरियम नाम की एक कुंआरी से जन्म लिया।

> स्वर्गदूत ने उससे कहा, "हे मरियम; तू भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है और देख तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलायेगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा, और उसके राज्य का अन्त न होगा।" (लूका १:३०-३१)।

> और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा (यूहन्ना १:१४)।

> यूहन्ना १:१४ में बताया गया पिता कौन है? परमेश्वर यीशु का पिता है। दूसरा पतरस १:१७ हमें बताता है, उसे आदर व महिमा पिता के

द्वारा दी गयी जब एक आवाज सर्वोच्च महिमा से यह कहती हुई आई, "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूं!"

यह नाम "यीशु मसीह" उसके ईश्वरत्व को भी बताता है। जब स्वर्गदूत ने कहा कि उसका नाम यीशु रखा जायेगा, यह एक विशेष कारण से था। यीशु का अर्थ उद्धारकर्ता है। मत्ती १:२१ कहता है "वह एक पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना — क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से छुड़ायेगा।"

मसीह नाम का भी एक विशेष कार्य है। इसका अर्थ है "अभिषिक्त जन" या "मसीहा"। प्राचीन काल में जब किसी व्यक्ति का चुनाव राजा होने के लिये किया जाता था तो उसके सिर पर तेल उंडेला जाता था जो इस धर्म क्रिया का एक भाग था। इस प्रकार तेल का उंडेला जाना "अभिषेक" कहलाता था। प्रभु को "मसीह" या "अभिषिक्त जन" कहने का अर्थ हुआ कि वह राजा था। यहूदियों ने "मसीहा" नाम उस राजा और छुड़ाने वाले को दिया था जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे थे।

शमौन पतरस ने उसे राजा स्वीकार करते हुए कहा "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (मत्ती १६:१६)।

जो आपको करना है

१. दाहिने ओर के वाक्य यीशु का वर्णन करते हैं। बायीं ओर दिये हवालों को पढ़ें। तब प्रत्येक पद के सामने इनके वर्णन की संख्या लिख दें।

...अ.	फिलिप्पियों २:७	१)	परमेश्वर उसका पिता है।
...ब.	यूहन्ना १०:१७	२)	एक स्त्री से उसका जन्म हुआ।
...स.	फिलिप्पियों २:६	३)	वह उद्धारकर्ता है।
...ड.	गलतियों ४:४	४)	वह हमारे समान बन गया।
...इ.	प्रेरितों ४:१२	५)	वह ईश्वरीय है एवं परमेश्वर का स्वभाव उसमें हैं।

उसका उद्देश्य

उद्देश्य : २. ऐसे कथनों को पहचानना जो दर्शाते हैं कि यीशु क्रूस पर क्यों मरा और आज वह क्या कर रहा है।

यीशु इस संसार में मनुष्य को पाप से बचाने आया। लूका १९:१० कहता है, "मनुष्य का पुत्र खोये हुओं को ढूंढ़ने और बचाने के लिये आया।" हमें बचाने के लिये उसके पास एक ही रास्ता था — अपना प्राण देकर। "क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाये पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे" (मरकुस १०:४५)।

छुड़ौती का अर्थ है स्वतंत्र कर देना, बचाना, उद्धार करना या छुटकारा देना। यह एक अद्‌भुत प्रतिज्ञा सारी मानव जाति के लिये है। किन्तु हमें छुड़ाने के लिये यीशु को क्यों मरना पड़ा। यदि हम आदम और हव्वा की कहानी याद करें तो हमें मालूम होगा कि पाप के कारण मौत आई। परमेश्वर पाप के विरुद्ध है और अपने न्याय को भंग नहीं कर सकता। यदि पाप है तो पाप के बदले में मरना अवश्य है। इसलिये यीशु मसीह एक पापी के स्थान में मरने आया। कोई दूसरा इसे नहीं कर सकता था क्योंकि केवल वही एक है जो मौत के ऊपर विजय प्राप्त कर सका।

तो भी यह सरल नहीं था — प्रभु के लिये भी। वह, जो स्वर्गीय स्थानों पर विराजमान था स्वर्गदूत उसकी आज्ञा पालन के लिये उसके आगे खड़े रहते थे, वह जिसने आकाश व पृथ्वी एवं मनुष्य को बनाया, स्वयं सेवक बना गया। उसने अनुमति दे दी कि उसकी सृष्टि उसे दुख दे, तुच्छ समझे और कलवरी के क्रूस पर चढ़ाये ताकि वे बचाये जा सकें। पतरस की पहली पत्री १:१८-१९ में हम पढ़ते हैं।

> क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल चलन जो बापदादाओं से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चांदी सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ।

चूंकि यीशु सभी के लिये मरा तो क्या सभी लोग उद्धार पाते हैं? नहीं, क्योंकि परमेश्वर ने चुनाव के विशेष अधिकार को कभी भी अलग नहीं किया। प्रत्येक मनुष्य को अब भी स्वयं निर्णय लेने का अधिकार है। उसे यीशु को अपनी व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार करना है। यीशु ने अपने चेलों से कहा :

> तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जायेगा (मरकुस १६:१५-१६)।

> क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पायें। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए (यूहन्ना ३:१६-१८)।

यीशु हमारे लिये मरा। तो भी मनुष्य के उद्धार की कोई आशा न होती, यदि वह मर कर कब्र में पड़ा रहता।

बहुत से धर्मों में उनके अनुयायी अपने अगुओं की कब्रों पर मज़ार बनाते हैं। जिनके अन्दर मृत अगुवों की सम्मानित हड्डियां रहती हैं। किन्तु यीशु की कब्र खाली है, आश्चर्यकर्म के कारण जो क्रूस पर चढ़ाये जाने के तीन दिन बाद हुआ। यीशु मौत से जी उठा और जी उठने के बाद कई बार चेलों को दर्शन दिया।

> वह गाड़ा गया और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी उठा। और कैफा को फिर बारहों को दिखाई दिया। फिर पांच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिनमें से बहुतेरे अब तक वर्तमान है : पर कितने सो गये। फिर याकूब को दिखाई दिया तब सब प्रेरितों को दिखाई दिया और सब के बाद मुझको भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा हूं। (१ कुरिन्थियों १५:४-७)।

यीशु का जी उठना एक प्रमाण है जो उसके परमेश्वर के पुत्र होने को दर्शाता है। रोमियों १:४ कहता है, "वह (यीशु मसीह) पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओ में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।"

अपने आप को बहुत से लोगों को दिखाने एवं उत्साहवर्धक वचन कहने के बाद वह स्वर्ग में चढ़ गया। यह भी कोई रहस्य नहीं था क्योंकि वह अपने चेलों के देखते स्वर्ग पर चढ़ा।

तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी। और उन्हें आशीष देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया (लूका २४:५०-५१)।

यीशु अब क्या कर रहा है? जब वह उठा लिया गया उसने अपने पिता के दाहिने हाथ की ओर अधिकारपूर्ण जगह ले ली। वह अपने पिता से हमारी आवश्यकताओं के बारे में बातें करता है। आइए हम तीन आयतों को देखें जो बताती हैं कि वह अभी क्या कर रहा है।

"अब जो बातें हम कह रहे हैं उनमें से सबसे बड़ी बात यह हे, कि हमारा ऐसा महायाजक है जो स्वर्ग पर महामहिमन के सिंहासन के दाहिने जा बैठा" (इब्रानियों ८:१)।

"हे मेरे बालकों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूँ कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है अर्थात् धार्मिक यीशु मसीह" (१ यूहन्ना २:१)।

"इसलिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है" (इब्रानियों ७:२५)।

कितना अद्‌भुत है कि हमारे छुटकारे के लिये बहुमूल्य दाम पटाया जा चुका है। और क्रूस पर मरने, कब्र से जी उठने और पिता के पास रहने के लिये उठाये जाने के बाद वह हमें नहीं भूलता। वह प्रतिदिन हममें दिलचस्पी रखता और चाहता है कि हमारी सहायता करे जब कभी भी हम उसे ऐसा करने दें।

• • •

जो आपको करना है

२. निम्नलिखित कथनों के सही समापन के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींच दें। यीशु मसीह क्रूस पर मरा ताकि

अ. हमें छुटकारा दे।

ब. हमारी न्यायोचित मौत में हमारे बदले में मरे।

स. जितने लोग उस पर उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करते हैं उन्हें उद्धार दे।

ड. हमें अनन्त जीवन दे।

३. लूका २४:४६-४७ पढ़ें। पद ४६ हमें यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने एवं जी उठने के बारे में बताता है। पद ४७ बताता है कि उसे क्यों मरना एवं फिर जी उठना पड़ा। पद ४७ क्या कारण बताता है?

.....

.....

४. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर के अक्षर के सामने वृत्त खींच दें। वचन के अनुसार यीशु अब क्या कर रहा है? वह :

अ. दूसरी सृष्टि पर ध्यान दे रहा है।

ब. पिता से हमारी आवश्यकताओं के बारे में निवेदन कर रहा है।

स. निर्णय ले रहा है कि अनन्त जीवन कौन प्राप्त करेगा और कौन नहीं।

• • •

उसका वापस आना

उद्देश्य ३. रैपचर के समय घटने वाली कम से कम पांच घटनाओं को जानना।

प्रभु यीशु मसीह इस पृथ्वी पर फिर वापस आयेगा। हम इसे उसका दूसरा आगमन कहते हैं। बाइबल बताती है कि उस घटना के पहले उसकी कलीसिया (वे सभी जिन्होंने उस पर विश्वास किया है) हवा में उससे मिलने के लिये उठा ली जायेगी। इसे रैपचर कहते हैं। रैपचर के कुछ समय बाद वह पृथ्वी पर आयेगा एवं राज्य स्थापित करेगा।

विश्वासी रैपचर के इन्तजार में हैं क्योंकि इस घटना के समय हम उसके साथ रहने के लिये तथा अनन्त जीवन का इनाम प्राप्त करने के लिए उठा लिए जाएंगे। प्रेरितों के काम १:११ कहता है "यही यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर आयेगा।" पहला थिस्सलुनीकियों ४:१६-१७ भी बताता है :

> क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी और जो मसीह में मरे हैं वह पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिये जायेंगे कि हवा में प्रभु से मिलें। और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।

जब हम पाठ दस का अध्ययन करेंगे तब हम रैपचर (प्रभु यीशु एक दिन अपनी कलीसिया को ऊपर बादलों पर बुला लेगा) एवं भविष्य की दूसरी घटनाओं के विषय में अधिक सीखेंगे।

जो आपको करना है

५. निम्नलिखित सही कथनों के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींच दें।

अ. यीशु फिर पृथ्वी पर आएगा।

ब. दूसरा आगमन और रैपचर एक ही है।

स. प्रभु का पृथ्वी पर का राज्य रैपचर के समय स्थापित होगा।

ड. जितने यीशु पर विश्वास रखते हैं वह हवा में उससे मिलने जाएंगे।

६. पहला थिस्सलुनीकियों ४:१६-१७ फिर पढ़ें। कम से कम पांच ऐसी घटनाएं बताएं जो रैपचर के समय घटेंगी।

अ. .....

ब. .....

स. .....

ड. .....

इ. .....

अपने उत्तरों की जांच करें

१. अ. ४) वह हमारे समान बना।
ब. १) परमेश्वर उसका पिता है।
स. ५) वह ईश्वर है एवं परमेश्वर का स्वभाव उसमें है।
ड. २) एक स्त्री से उसका जन्म हुआ।
इ. ३) वह उद्धारकर्ता है।

४. ब. पिता से हमारी आवश्यकताओं के बारे में निवेदन कर रहा है।

२. ब. प्रत्येक के चारों ओर वृत्त खींच दें। वे सभी सही है।

५. अ. यीशु फिर से पृथ्वी पर आएगा।
ड. जितने लोग उस पर विश्वास करते हैं वे हवा में उससे मिलने जाएंगे।

३. कि उसके नाम से छुटकारे का संदेश एवं पापों की क्षमा का प्रचार सारी जातियों में अवश्य किया जाए।

६. आप निम्नलिखित में से कोई पांच लिख सकते हैं :
अ. आज्ञा की मुनादी।
ब. परमेश्वर की तुरही की आवाज।
स. प्रभु नीचे उतर आएगा।
ड. मसीह में मृतक जी उठेंगे।
इ. जीवित विश्वासी उठा लिए जाएंगे।
फ. हम हवा में प्रभु से मुलाकात करेंगे।
ज. अनन्तकाल तक प्रभु के साथ होंगे।